JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

राम औतार सिंह
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
प्रो0 (डॉ.) प्रभात शुक्ल
प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

सारांशः– मानव प्राणी को अन्य जीवों से विशिष्ट बनाने वाली सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी चिन्तन और विचार करने की क्षमता है। जहाँ अन्य प्राणी केवल आहार, निद्रा, प्रजनन और भय जैसी मूल प्रवृत्तियों के अधीन रहते हैं वहीं मनुष्य के मन में आकांक्षा और महत्वाकांक्षा का भाव होता है। शैक्षिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति के प्रयास की मात्रा को सुनिश्चित करता है तथा यह एक प्रकार व्यक्तिगत विकास होता है। व्यक्ति का शैक्षिक आकांक्षा स्तर उसका अपने गुणों के बारे में जानकारी पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन लैंगिक संदर्भ में करना है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 1045 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को स्तरीकृत न्यादर्शन विधि के माध्यम से चयनित किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी (2015) का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी–अनुपात सांख्यिकीय तकनीकियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अन्तर नहीं है जबकि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्दः *माध्यमिक स्तर, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक आकांक्षा स्तर।*

भूमिकाः–

शिक्षा विकास की वह आधारशिला है जिसकी आवश्यकता प्रत्येक सभ्य व्यक्ति को अपने विकास के लिए रहती है। विभिन्न परिस्थितियों व विभिन्न रूपों में एक व्यक्ति द्वारा सीखना और उससे अपने ज्ञान में वृद्धि करना ही शिक्षा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक ओर जहां शिक्षा मानव के अपने जीवन को निरन्तर विकास की ओर उन्मुख करते रहने की प्रक्रिया है वहीं अपने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष साधनों के द्वारा समाज को मार्गदर्शन व गति प्रदान करने की भी एक प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है। माध्यमिक शिक्षा को हाईस्कूल स्तर तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा को इण्टरमीडिएट कहा

जाता है जिसे सामान्य शिक्षा की संज्ञा दी गई है और यह संपूर्ण देश में समान रूप से लागू है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा 10+2 स्तर को 5+3+3+4 के रूप में वर्गीकृत कर दिया गया है। इस संरचना के अन्तिम चार वर्षों की शिक्षा को सेकेंडरी स्टेज के रूप में परिभाषित किया गया है तथा 14–18 वर्ष तक बच्चे इसमें सम्मलित हैं।

मनुष्य के मन में आकांक्षा और महत्वाकांक्षा का भाव हमेसा होता है। यह आकांक्षा ही बालक को बचपन से ही विभिन्न वस्तुओं की चाहत और इच्छाएँ प्रकट करने के लिए प्रेरित करती है जैसे खिलौने माँगना। इन्हीं आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए बालक निरन्तर प्रयासशील रहता है और इस प्रक्रिया में उसकी कार्य करने की क्षमता और शक्ति में वृद्धि होती है। आकांक्षा स्तर का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को निर्धारित करना एवं उसे प्राप्त करने की तात्कालिक क्षमता से है। आकांक्षाओं के निर्धारण में मूल्य, संस्कृति, वातावरण आदि का योगदान होता है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर, आकांक्षा स्तर का ही एक प्रकार है। शैक्षिक आकांक्षा स्तर से तात्पर्य शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा से है अर्थात् अपनी योग्यताओं तथा अन्य साधनों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा से है। शैक्षिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति की उपलब्धि की गुणवत्ता के विषय में व्यक्तिगत लक्ष्य को दर्शाता है जिसे कि वह अपनी शारीरिक, मानसिक, योग्यता, समान–समूह एवं संसाधनों को ध्यान में रखते हुए प्राप्त करने की कोशिश करता है। स्पष्ट है कि शैक्षिक आकांक्षा स्तर निकट भविष्य में व्यक्ति की संभावित शैक्षिक उपलब्धि है।

दी इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (1982) के अनुसार ''शैक्षिक आकांक्षा स्तर से तात्पर्य शैक्षिक लक्ष्य के स्तर से है जो कि उसके शारीरिक तथा मानसिक गुणों से सम्बन्धित होता है तथा उसके वातावरण के अनुरूप होता है।''

शैक्षिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति के प्रयास की मात्रा को सुनिश्चित करता है तथा यह एक प्रकार व्यक्तिगत विकास होता है। व्यक्ति का शैक्षिक आकांक्षा स्तर उसका अपने गुणों के बारे में जानकारी पर आधारित है। यह वास्तव में उसके भीतर एक प्रकार की अभिप्रेरणा का कार्य करता है जो कि उसे विभिन्न विषयों, पाठ्यक्रमों में उपयुक्त चयन के लिए प्रेरित करता है फलतः वह कुछ महत्त्वपूर्ण विकल्पों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए तथा अन्य विकल्पों को छोड़ते हुए आगे बढ़ता जाता है। इस प्रकार चयन को सीमित करते हुए ही वह वास्तविक लक्ष्य तक पहुँचता है। एक सामान्य व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तर अपने गत उपलब्धि के आलोक में तय करता है। सामान्यतः वह अपना आकांक्षा स्तर उपलब्धि स्तर से थोड़ा ऊपर रखता है यदि उसकी प्राप्ति उसे हो जाती है तो अगली बार अपना आकांक्षा स्तर उपलब्धि स्तर से थोड़ा और ऊपर रखता है।

सम्बन्धित साहित्यः–

अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न शोधार्थियों द्वारा पूर्व में अध्ययन किये गये जिनमें से **कुमार, शैलेन्द्र एवं गुप्ता, शैलजा (2025)** ने पाया कि अधिकतर विद्यार्थी (66.5 प्रतिशत) औसत आकांक्षा स्तर रखते हैं, जबकि उच्च और निम्न स्तर वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत क्रमशः 20 और 13.5 पाया गया। शोध के निष्कर्षों ने यह प्रतिपादित किया कि शैक्षिक आकांक्षा के संदर्भ में लिंग आधारित कोई सार्थक अन्तर विद्यमान नहीं था किंतु आवासीय पृष्ठभूमि का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ जहाँ ग्रामीण शिक्षार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा का स्तर अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर पाया गया। **वर्मा, रेणु एवं मेहता, नीति (2024)** ने पाया कि सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं था इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं था जबकि विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सहसम्बन्ध था। **वर्मा, जयश्री एवं कुमारी, सुनीता (2023)** ने पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि का उनकी

शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक संबंध नहीं था। **सिंह, पूजा (2022)** ने कि डायट एवं स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण केन्द्रों के डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। **गुप्ता, मधु (2021)** ने पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान संकाय के छात्रों के मध्यमान आकांक्षा स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं था जबकि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर की कला एवं विज्ञान संकाय की छात्राओं के मध्य आकांक्षा स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। **तिवारी, आनंद (2020)** ने पाया कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **नेगी, संगीता (2019)** ने पाया कि बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निम्न होना, बौद्धिक योग्यता का स्तर निम्न होना है। निम्न वर्ग के बालक एवं बालिकाओं में उच्च वर्ग के बालक एवं बालिकाओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर उच्च पाया गया। **रविशंकर, कुमार, वीरेन्द्र एवं अरोरा, संतोष (2018)** ने ने पाया कि पारिवारिक संरचना का विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वहीं सामाजिक परिवेश और विद्यालय के प्रकार की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है, परिणाम बताते हैं कि शहरी परिवेश और पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण क्षेत्रों और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रबल होती है। **चौहान, सारिका (2017)** ने पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा का स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध था अर्थात् सार्वजनिक और निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में जिनमें आकांक्षा स्तर उच्च है वह छात्र–छात्रा बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः–

वर्तमान समय में शिक्षा व्यक्ति और समाज के समग्र विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय समाज की प्रगति और विकास के लिए प्रत्येक स्तर पर उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। माध्यमिक शिक्षा, जो कि प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी है, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास उनकी रुचियों और आकांक्षाओं को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान युग में जहाँ प्रतिस्पर्धा और आधुनिकता का दबाव बढ़ता जा रहा है, विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

समस्या कथन :–

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

1. **माध्यमिक स्तरः–** प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर से अभिप्राय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित कक्षा 10वीं के पाठ्यक्रम से है।
2. **विद्यार्थीः–** प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों से तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर दसवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।
3. **शैक्षिक आकांक्षा स्तरः–** प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा स्तर से तात्पर्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वी.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी पर प्राप्त अंकों से है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

उद्देश्य के आधार पर निम्न परिकल्पनायें निर्धारित की गयीं–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकनः– प्रस्तुत अध्ययन को शाहजहाँपुर महानगर क्षेत्र तक सीमित रखा गया है। इसमें केवल माध्यमिक स्तर के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि :– प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समग्र (जनसंख्या):– प्रस्तुत शोधकार्य में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त तथा शाहजहाँपुर जनपद में स्थित समस्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। वर्तमान में शाहजहाँपुर जनपद में 370 माध्यमिक स्तर के विद्यालय संचालित हो रहे हैं जिनमें कक्षा 10 में लगभग 37823 विद्यार्थी नामांकित हैं जिनमें से 22679 छात्र तथा 15144 छात्रायें हैं। यह सभी विद्यार्थी वर्तमान शोध की जनसंख्या है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन विधिः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें न्यादर्श को दो स्तरों पर चयनित किया गया। प्रथम स्तर पर शाहजहाँपुर जनपद में माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में से 10प्रतिशत माध्यमिक विद्यालयों का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। जिस हेतु माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध सूची को आधार बनाया गया है। इस प्रकार जनपद शाहजहाँपुर के कुल 370 माध्यमिक विद्यालयों में से 37 विद्यालय न्यादर्श के रूप में चयनित हुए। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से सर्वेक्षण के दिन उपस्थित विद्यार्थियों में प्रत्येक विद्यालय से 25 प्रतिशत अर्थात् प्रत्येक चौथे विद्यार्थी का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। विद्यार्थियों के चयन हेतु विद्यालय की उपस्थिति पंजिका को आधार बनाया गया। इस प्रकार कुल 1045 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

शोध उपकरण :– प्रस्तुत अध्ययन में मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापन हेतु डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी (2015) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीकियाँ :– प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी–अनुपात सांख्यिकीय तकनीकियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचनः–

परिकल्पना 01:– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालय स्वरूप	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	302	27.91	7.51	0.50	1.26
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	743	27.28	6.77		

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान = 1.96

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 27.91 तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 27.28 पाया गया। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 7.51 तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 6.77 पाया गया। माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर दोनों समूहों के मध्य टी–मान 1.26 पाया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान के लिए तालिका मान 1.96 से कम है। जो कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य निरर्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। मध्यमान के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों शैक्षिक आकांक्षा स्तर लगभग समान पाया गया।

परिकल्पना 02:– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालय स्वरूप	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान
सरकारी विद्यालय के छात्र	148	28.99	7.59	0.70	3.06*
निजी विद्यालय के छात्र	411	26.86	6.35		

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान = 1.96 *अन्तर सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 28.99 तथा निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26.86 पाया गया। सरकारी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 7.59 तथा निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 6.35 पाया गया। माध्यमिक स्तर के

सरकारी तथा निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर दोनों समूहों के मध्य टी–मान 3.06 पाया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान के लिए तालिका मान 1.96 से अधिक है। जो कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। मध्यमान के अवलोकन से भी स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी के छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से उच्च पाया गया।

परिकल्पना 03:– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालय स्वरूप	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान
सरकारी विद्यालय की छात्रायें	154	26.87	7.32	0.71	1.33
निजी विद्यालय की छात्रायें	332	27.82	7.24		

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान = 1.96

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26.87 तथा निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मध्यमान 27.82 पाया गया। सरकारी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 7.32 तथा निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी पर प्राप्तांकों का मानक विचलन 7.24 पाया गया। माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर दोनों समूहों के मध्य टी–मान 1.33 पाया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान के लिए तालिका मान 1.96 से कम है। जो कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य निरर्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। परन्तु मध्यमान के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी की छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से निम्न पाया गया।

निष्कर्ष:–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। मध्यमान के आधार पर प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों शैक्षिक आकांक्षा स्तर लगभग समान है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। मध्यमान के आधार पर प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के सरकारी के छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निजी विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से उच्च है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु मध्यमान के आधार पर प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के सरकारी की छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निजी विद्यालयों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से निम्न है।

शैक्षिक उपयोगिताः–

अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा पर विद्यालय का स्वरूप प्रभाव डालता है। विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर को बेहतर बनाना है तो हमें विद्यालय के संसाधनों, पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक प्रक्रिया में सुधार करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- **कुमार, एस. एवं गुप्ता, एस. (2025)** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन. *International Journal of Applied Research*, 11(1), 254-256. https://www.allresearchjournal.com/archives/2025/vol11issue1/PartD/11-1-47-902.pdf
- **वर्मा, आर. एवं मेहता, एन. (2024).** माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनके उपलब्धि अंकों के संबंध में एक अध्ययन. *Airo Journals: Peer Reviewed Multidisciplinary International*, 3(2), 350-358. https://www.airo.co.in/publications/30779-renu-paper-2-(1).pdf
- **वर्मा, जे. एवं कुमारी, एस. (2023).** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि का उनके शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 11(6), b29-b31. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2306115.pdf
- **गुप्ता, प्रो. एस.पी. एवं गुप्ता, डॉ. अलका (2022).** *सांख्यिकीय विधियाँ.* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।
- **सिंह, पी. (2022).** उत्तर प्रदेश के डायट एवं स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों, शिक्षण अभिवृत्ति एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन. [Doctoral Dissertation, Veer Bahadur Singh Purwanchal University, Jaunpur, U.P.]. Shodhganga Repository. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/460908
- **गुप्ता, एम. (2021).** उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. [Doctoral Dissertation, Chhatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur, U.P.]. Shodhganga Repository. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/460006.
- **गुप्ता, प्रो. एस.पी. (2020),** *अनुसंधान संदर्शिका (सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि).* प्रयागराजः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।
- **तिवारी, ए. (2020).** स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं के आकांक्षा स्तर, शैक्षिक अभिवृत्ति एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन. [Doctoral Dissertation, Nehru Gram Bharti Sam University, Prayagraj, U.P.]. Shodhganga Repository. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/392996.
- **नेगी, संगीता (2019).** विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर, बुद्धि, का तुलनात्मक अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 7(1), 113-124. https://ijcrt.org/papers/IJCRT1134039.pdf
- **गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2018).** *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान : सिद्धान्त एवं व्यवहार.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

- **रविशंकर, कुमार, वी. एवं अरोरा, एस. (2018)** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. *Review of Research.* 7(9), 1-5. https://oldror.lbp.world/UploadedData/5081.pdf
- **Chauhan, S. (2017).** A Study of Level of Aspiraiton in Predicting Academic Achievement Among Secondary School Students. *International Journal of Advanced Technology in Engineering and Science.* 5(02), 224-230. http://www.ijates.com/ADMIN/admin/postimages/images/fullpdf/1486968835_G1017ijates.pdf
- **कपिल, एच.के. (2015).** *अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में).* आगराः भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट।
- **नायक, आर. एवं रूहेला, एस. (2012).** *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा(तृतीय संस्करण).* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।